चुन्नीलाल सलूजा

बच्चों को बिगड़ने से कैसे रोकें

बच्चों के प्रति आपका लापरवाह रहना, आवश्यकता से अधिक लाड़-प्यार जताना, या फिर अपनी व्यस्तता में घिरे रहकर उपेक्षा करना, बच्चों के बिगड़ने के प्रमुख कारण हैं। ऐसे में आवश्यकता है बालमनोविज्ञान की जानकारी के साथ-साथ आपकी थोड़ी सी सतर्कता एवं सूझबूझ की। जो आपके बच्चों को देगी सुन्दर और सफल भविष्य।

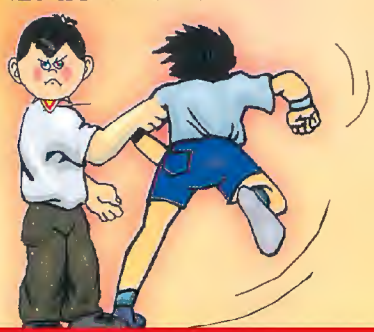

बच्चों को
बिगड़ने
से कैसे रोके

आज के समय में हर माता-पिता के लिए एक अनिवार्य पुस्तक, जो बच्चों को बिगड़ने से रोकना सिखाए।

- क्या आपका बच्चा बिगड़ चुका है? या क्या उसके चाल-चलन से ऐसा प्रतीत होता है कि वह बिगड़ सकता है।
- आज के मां-बाप और अभिभावकों के लिए यह सर्वाधिक चिंता का विषय अवश्य है, लेकिन यदि वे अपने दायित्वों के प्रति सचेत हैं, तो चिंता की आवश्यकता नही रहेगी।
- आज की पश्चिमोन्मुखी जीवन शैली नई पीढ़ी को रंगीन सपने दिखाकर उन्हें भ्रमित कर रही है और चकाचौंध की इन अंधी गलियों में उन्हें पथ भ्रष्ट कर रही है।
- यदि आप जागरूक हैं, आप में दूरदर्शिता है, तो आप अवश्य चाहेंगे कि ज़ख्म के नासूर बन जाने से पहले ही उसे जड़ से उखाड़कर ख़त्म कर दिया जाए।
- इस दृष्टि से यह पुस्तक आपके लिए सौ प्रतिशत लाभदायक सिद्ध होगी, क्योंकि इसमें बहुत ही वैज्ञानिक और व्यावहारिक ढंग से बच्चों के बिगड़ने के कारण, लक्षण और उनको बिगड़ने से राकने के ठोस उपाय दिए गए है।

बच्चों को
बिगड़ने
से कैसे रोके

चुन्नीलाल सलूजा

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई
जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© **कॉपीराइट:** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521502-2-9

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

बिगड़ैल बच्चों से आशय

बच्चों के बिगड़ने की समस्या आज काफ़ी गंभीर बन गई है। बिगड़ैल बच्चों के कारनामों ने अब परिवार से बाहर निकलकर समाज और राष्ट्र को प्रभावित करना शुरू कर दिया है। बच्चों द्वारा खेल-खेल में साथी बच्चे की हत्या कर डालना, अवयस्क किशोर-किशोरियों द्वारा शराब पीकर तेज रफ्तार गाड़ी चलाना और राहगीरों को कुचलकर मार देना, देर रात तक घर से बाहर रहना, होटलों में जाना, पार्टियां, डिस्कोथिक, स्वच्छंद आचरण करना, नशाखोरी का शिकार होना आदि ऐसे कारनामे हैं, जो किसी भी समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय हो सकते हैं। इससे भी आगे अपराधियों द्वारा बहला-फुसला कर बच्चों के नाजुक हाथों में बंदूक थमा देने या उन्हें तस्करी में डाल देने आदि के समाचारों को समाजविज्ञानी एक चेतावनी, एक चुनौती के रूप में लेने को बाध्य हैं।

आधुनिकता के इस दौर में बच्चों के जीवन स्तर में भी सुधार आया है। बच्चों के खान-पान, पहनाव-उढ़ाव और शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 50 वर्षों की तुलना में आज व्यापक तरक्की हुई है। जैसे-जैसे परिवारों का आर्थिक स्तर बढ़ा है, बच्चों को भी अधिक सुविधाएं उपलब्ध हुई हैं। अब एकाध जोड़ी कपड़े और कलम-दवात लेकर बच्चों को मीलों दूर पैदल स्कूल नहीं जाना पड़ता। हर माता-पिता अपने बच्चे पर स्वयं से अधिक पैसा खर्च करना चाहते हैं। उसे अच्छे स्तर के कपड़े, जूते, किताब, कॉपी, बैग उपलब्ध कराकर घर से ही सवारी की सुविधा उपलब्ध कराते हैं और अच्छे-से-अच्छे विद्यालय में शिक्षा दिलाना चाहते हैं।

इतनी सुविधाओं और शिक्षा के स्तर में सुधार के बावजूद बच्चों में अनुशासनहीनता सारे बांध तोड़ रही है। कारण यह है कि धन कमाने की होड़

में बनते जा रहे एकल या छोटे परिवार, तथा माता-पिता दोनों की व्यस्तताएं बच्चों को परिवार के स्तर पर पूरी तरह संस्कार नहीं देने दे रही है। अधिकांश माता-पिताओं के पास इतना समय ही नहीं है कि वे घर से बाहर या स्कूल में बच्चे की गतिविधियों की जानकारी ले सकें। कुछ माता-पिता तो घर में भी बच्चे के आचरण, व्यवहार पर ध्यान नहीं दे पाते। वे पैसे खर्च कर बच्चों का आचरण खरीदना चाहते हैं, जो मिलना संभव ही नहीं है। परिणामतः बहुत से बच्चे अपने मनपसंद आचरण के सहारे बिगड़ैलपन की अंधी गलियों की ओर बढ़ते जा रहे हैं। इसलिए अब समय आ गया है कि बच्चों की बर्बादी पर आंसू बहाने की स्थिति आने से पहले लाडलों के चरित्र निर्माण के प्रति सचेत हों। सवाल उठता है कि आखिर बिगड़ैलपन क्या है? ऐसे बच्चे जिन्हें अपने भविष्य, कैरियर की कोई चिंता नहीं, अपनी सामाजिक और पारिवारिक प्रतिष्ठा का कोई ख्याल नहीं, सामाजिक वर्जनाओं का उल्लंघन करने में जिन्हें जरा भी संकोच या हिचक नहीं, ऐसे बच्चे ही बिगड़ैल बच्चे कहलाते हैं। उनकी प्रवृत्ति बिगड़ैल हो जाती है, जो आयु, परिस्थितियों और साधनों के साथ-साथ बढ़ती जाती है। संक्षेप में जिन बच्चों की सोच, आचरण और व्यवहार पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय अपेक्षाओं के विपरीत, अनुशासनहीन होता है, साधारण बोल-चाल की भाषा में इन्हें ही बिगड़ैल बच्चे कहते हैं।

प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिरिल बर्ट ने इस प्रकार के बच्चों के संदर्भ में कहा है कि ''जिन बच्चों में समाज विरोधी प्रवृत्तियां बढ़ जाती हैं और प्रशासन को भी उसके विरुद्ध सोचना पड़ता है, बिगड़ैल बच्चों की श्रेणी में आते हैं।''

कुछ इसी प्रकार की बात मनोवैज्ञानिक हीली ने भी स्वीकार की है। उसके अनुसार ''बिगड़ैलपन एक प्रकार की आपराधिक वृत्ति ही है।'' अतः इसे आपराधिक वृत्ति की प्राथमिक अवस्था कहना अनुचित न होगा। हीली के ही अनुसार ''वह बालक जो समाज द्वारा स्वीकृत आचरण का पालन नहीं करता, बिगड़ैल कहलाता है।''

समग्र रूप से बिगड़ैल बच्चों के संबंध में शाब्दिक अभिव्यक्ति चाहे जिस रूप में की जाए, उसका आशय यही है कि समाज की दृष्टि में जो श्रेयस्कर है, उसे स्वीकार न करते हुए यदि बच्चे उसके विपरीत आचरण करते हैं, तो वह परिवार, समाज और राष्ट्र पर बोझ बन जाते हैं। यदि उनकी इस अनुशासनहीन सोच और आचरण को नियंत्रित नहीं किया गया या उसे किसी प्रकार का प्रोत्साहन दिया गया, तो ऐसे बिगड़ैल बच्चे भविष्य में अपराधी तक बन सकते हैं। अतः सुखी परिवार और स्वस्थ समाज के लिए बिगड़ैलपन की इस समस्या को रोकना आज हमारी सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। समस्या के समाधान के

लिए हमें बच्चों की मानसिकता और उन परिस्थितियों को देखना होगा, जो बच्चों को बिगड़ने के लिए प्रेरित करती हैं।

कैसा होता है बच्चों का मन?

कहते हैं कि बच्चे मन के सच्चे होते हैं। वे मन, वचन और कर्म से शुद्ध, सरल और निर्मल होते हैं। बिल्कुल वर्षा की बूंदों की तरह, लेकिन जिस प्रकार से वर्षा की निर्मल बूंदें धरती का स्पर्श पा कर मैली हो जाती हैं, ठीक उसी प्रकार से बच्चे भी समाज और परिवार का स्पर्श-संपर्क पा कर अच्छे-बुरे बन जाते हैं। यह अच्छाई-बुराई चूंकि उन्हें समाज और परिवार से मिलती है, इसलिए उनकी सरलता मलिनता में बदलने लगती है। यह मलिनता ही उसे जीवन के दाव-पेंच, झूठ-सच, हेरा-फेरियां सिखाने लगती है। जब तक बच्चा अपनी सीमाओं में रहता है, तो ये हेरा-फेरियां सहन होती रहती हैं। परिवार और समाज भी उसे बच्चा समझकर माफ करता रहता है, लेकिन जब उसकी ये हेरा-फेरियां करतूतों में बदलने लगती हैं, सहन शक्ति के बाहर होने लगती हैं, तो बच्चे मन के सच्चे न रहकर बिगड़ने लगते हैं। परिवार और समाज पर बोझ बनने लगते हैं। परिवार के ऐसे बच्चे उद्दंडता की सारी सीमाएं पार कर इतने बिगड़ जाते हैं कि वे अपने ही अभिभावकों की कमजोरियों का लाभ उठाने लगते हैं। शराब पीना, तेज गाड़ी चलाना, देर रात तक घर से बाहर रहना, लड़ाई-झगड़ा करना और कभी-कभी हत्या जैसे गंभीर अपराध कर बैठने वाले बिगड़ैल बच्चों के कारनामों की खबरें अखबारों में आए दिनों छपती रहती हैं, जो समाज में बढ़ते हुए बिगड़ैल बच्चों की सच्चाई प्रकट करती हैं।

क्या चाहता है आपका लाडला आप से?

बच्चों के पालन-पोषण, उसके वर्तमान और भविष्य को मां-बाप के विचार, रहन-सहन और जीवन शैली प्रभावित करती है। परिवार चाहे संयुक्त हो अथवा एकल, बच्चों की अपेक्षाओं का केंद्र मां-बाप ही होते हैं। बच्चा अपने मां-बाप से इतना अधिक प्रभावित होता है कि परिवार के अन्य सदस्य चाहे जैसे भी हों, लेकिन वह मां-बाप को ही अपना प्रेरक और आदर्श मानता है। मां-बाप का संरक्षण, स्नेह, जहां लड़के-लड़कियों में आत्मविश्वास पैदा करता है, वहीं उनकी कार्यक्षमता बढ़ाता है। समाज में चाहे कितने ही परिवर्तन हो जाएं, सामाजिक और नैतिक मूल्यों का चाहे कितना ही ह्रास हो जाए, लेकिन बच्चों पर मां-बाप

का जो प्रभाव पड़ता है, वह भी कम नहीं होता। इस प्रकार बच्चे अपने मां-बाप से जो अपेक्षाएं करते हैं, वे आगे दी जा रही हैं–

आत्मीयता की चाहत

जिस प्रकार से प्यास की तृप्ति के लिए प्राणी को जल की आवश्यकता होती है, कुछ इसी प्रकार की चाह बच्चे के मन में मां-बाप से होती है। इस चाह की अभिव्यक्ति अभिभावक बच्चे को गोद में लेकर, उसे हवा में उछाल कर, चूम कर, उसे सीने से लगाकर करते हैं। इस प्रकार के आत्मीय स्नेह की चाह उम्र के साथ-साथ बढ़ती जाती है। इसलिए केवल छोटे बच्चों को ही नहीं, बल्कि किशोरावस्था को प्राप्त लड़के और उसके बाद युवा बच्चे भी मां-बाप से यही स्नेह, संरक्षण और आत्मीय लगाव चाहते हैं। इसलिए कहा जाता है कि बच्चा चाहे कितना ही बड़ा हो जाए मां-बाप के लिए हमेशा बच्चा बना रहता है। हमारे देश में विवाह हो जाने के बाद मां-बाप लड़के-लड़की के प्रति उदासीनता बरतने लगते हैं। यही कारण है कि बच्चों के मन से परिवार के प्रति स्नेह स्रोत सूखने लगते हैं। जब लड़के-लड़कियां मां-बाप के आत्मीय स्नेह से वंचित रह जाते हैं, तो उनमें परिवार के प्रति (मां-बाप के प्रति) दूरियां बढ़ने लगती हैं। आत्मीय स्नेह की यह वंचना लड़के-लड़कियों में एक दबी इच्छा बन कर रह जाती है। इस संबंध में दिल्ली की श्रीमती अभिलाषा जैन का मत है कि आत्मीय स्नेह की यह अभिव्यक्ति यदि आप बच्चों को प्रत्यक्ष में नहीं दे पातीं, तो अप्रत्यक्ष में पूरी करें।

बच्चों की इस इच्छा को पूरा करने के लिए उनसे निरंतर संपर्क, संवाद बनाए रखें। जो बातें माता-पिता किन्हीं कारणों से प्रत्यक्ष में नहीं कह पाते, उन बातों को फोन अथवा पत्र द्वारा अभिव्यक्त करें। पंडित नेहरू द्वारा 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' इसका एक अच्छा उदाहरण है। मां-बाप से स्नेह पाने की इस इच्छा को मान्यता दें। बच्चा आप से और परिवार से हमेशा जुड़ा रहेगा। पारिवारिक अपेक्षाओं को पूरा करेगा। मां-बाप के स्नेह से वंचित बच्चा उपेक्षा की प्रतिक्रिया स्वरूप जो व्यवहार करेगा, वह उसे बिगड़ने की ओर ले जाएगा।

मां के प्रति पापा के स्नेह की चाह

चूंकि बच्चे मां को बहुत अधिक स्नेह करते हैं, मां भी बच्चे पर अपनी सारी खुशियां न्यौछावर करती है, इसलिए बच्चे मां पर अपना संपूर्ण स्नेह लुटाते हैं। स्नेह के इस व्यवहार की पूर्ति के लिए वे पापा से भी यह अपेक्षा करते हैं कि वह मां को प्यार करें। मां से पापा किसी प्रकार के अपशब्द न बोलें। उस पर

हाथ न उठाएं। जो बातें अथवा व्यवहार मां को पसंद नहीं, जिनसे मां का दिल दुखता हो वैसी बातें या व्यवहार पापा न करें। यदि पिता देर रात घर लौटते हैं, घर आकर मां से दुर्व्यवहार करते हैं, कर्कश बोलते हैं, प्रताड़ित करते हैं, तो पिता द्वारा मां के प्रति प्रदर्शित किया गया यह 'नाटक' बच्चे को बहुत गहराई तक प्रभावित करता है और उसके दिल में पिता के प्रति प्राथमिक आक्रोश अंकुर बनकर फूटने लगता है। बच्चा चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, पापा का मम्मी के प्रति प्रदर्शित किया गया स्नेह देखकर मन-ही-मन प्रसन्न होता है। एक वर्ष की सोनाली भी मम्मी-पापा को प्यार करते देख आनंदित आंखों द्वारा और मधुर मुस्कान होठों पर बिखेर कर अपनी प्रसन्नता प्रदर्शित करती है। पत्नी के प्रति अपने प्यार को स्नेह भाव से प्रदर्शित करने वाला व्यक्ति ही अच्छा पिता होता है और ऐसे पिता के बच्चे कम ही बिगड़ पाते हैं, जबकि पति-पत्नी के झगड़े देखने, सुनने, सहने वाले बच्चे हमेशा भावनात्मक रूप से तनावग्रस्त रहते हैं। छोटी उम्र के बच्चों के मन में पिता का भय, घर का तना हुआ माहौल ही उन्हें क्रोधी, चिड़चिड़ा और कर्कश बना देता है। यही प्रवृत्ति बच्चों में बिगड़ैलपन को बढ़ावा देती है।

बच्चे अभिभावकों का समय चाहते हैं

बच्चे चाहे छोटे हों अथवा बड़े, हमेशा यह चाहते हैं कि अभिभावक उन्हें कुछ समय दें। रोता हुआ बच्चा भी मां की गोद में जाकर चुप हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बच्चे मां-बाप के जितने पास रहते हैं, उनका मानसिक विकास तो संतुलित होता ही है, उनका शारीरिक विकास भी अच्छा होता है। छोटे बच्चों को जब भी मां अपने पास सुलाती हैं, तो वे सुख की नींद सोते हैं। इसके विपरीत जब बच्चे अकेले सोते हैं, तो वे बीच-बीच में जाग कर मां का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यदि मां उन्हें स्नेहिल हाथों से नहीं थपथपाती, तो वे जाग जाते हैं।

बाल्यावस्था के बाद किशोरावस्था के बच्चे भी चाहते हैं कि अभिभावक उनकी मनोवैज्ञानिक इच्छाओं, अपेक्षाओं को जानें, पूरा करें। उनसे बातचीत करें। विचार-विमर्श करें। कैरियर के चुनाव में उन्हें सहयोग दें। स्कूल, पड़ोस अथवा मित्र-मंडली के संबंध में उनकी बातें जानें। उनकी छोटी-छोटी सफलताओं और उपलब्धियों की प्रशंसा करें।

दिनेश की लिखी और छपी कविता को जब उसके पिता ने समय देकर रुचि से पढ़ा, सराहा तो उसे बहुत अच्छा लगा। प्रतिदिन वह जो कुछ भी लिखता,

पिता को दिखाता। पिता द्वारा दिनेश के लेखन में रुचि लेने का परिणाम यह हुआ कि वह एक दिन प्रतिष्ठित कवि बन गया। आज उसके तीन काव्य संग्रह छप चुके हैं।

बच्चों का दृष्टिकोण समझें

बच्चे अपने मन की सारी बातें अभिभावकों को बताना चाहते हैं, लेकिन आधुनिक और बड़ा बनने की सोच और ललक ने अभिभावकों को इतना व्यस्त बना दिया है कि उन्हें यह देखने का समय ही नहीं मिलता कि उनके लड़के-लड़कियां क्या कर रहे हैं? क्या पढ़ रहे हैं? कहां जा-आ रहे हैं? उनके बच्चे घर से कितना जेब खर्च ले जा रहे हैं? उसका क्या उपयोग कर रहे हैं? पिता अपने कामों में इतने अधिक व्यस्त रहते हैं कि वे कई-कई दिनों तक अपने बच्चों से मिल ही नहीं पाते। मां अपनी सहेलियों या किटी पार्टियों में इतनी व्यस्त रहती हैं कि उन्हें बच्चों की ज़रूरतों को समझने का समय ही नहीं मिलता।

सरला सफेद शलवार-कमीज पहन कर अपने व्यक्तित्व को निखारना चाहती है जबकि उसके पिता हाई सोसायटी में रहना सिखाने के लिए स्लीवलैस स्कर्ट पहना कर जापानी गुड़िया बनाना चाहते हैं। दोनों के दृष्टिकोण और विचारों का यह अंतर दोनों को दूर-दूर बनाए रखता है। सरला के सोचने-समझने का तरीका पिता को फूटी आंख नहीं सुहाता। वह हमेशा उन्हें देहाती-गंवार कह कर बुलाते हैं। एक दिन सरला के पिता ही मुझसे बोले, ''मैंने तो अब उससे कुछ कहना ही छोड़ दिया है...।'' इसी के प्रत्युत्तर में सरला का विचार है, ''पापा तो मुझे चाहते ही नहीं...।''

चरित्रवान पापा

देखने-सुनने और समझने में यह बात छोटा मुंह, बड़ी बात लगती है, लेकिन बच्चों के दिल पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। बच्चे यह अपेक्षा करते हैं कि उनके मम्मी-पापा चरित्रवान हों। एक-दूसरे के प्रति निष्ठावान हों। लोग उनके मम्मी-पापा को चरित्रवान समझें। पापा के इन्हीं गुणों के कारण समाज में उनकी प्रतिष्ठा हो, वे अपने पापा पर गर्व कर सकें। प्रारंभिक कक्षाओं में मैंने जब भी किसी लड़के के पापा के बारे में कुछ जानना चाहा, तो अच्छे पापा के कारण वे गर्व का अहसास कर उनके बारे में बताते। इसके विपरीत कुछ लड़के अपने पापा के कारण मन में हीनता का भाव लाते।

यह शाश्वत सत्य है कि बच्चों की इन जरूरतों को पापा के अलावा और

कोई दूसरा पूरा नहीं कर सकता। यही कारण है कि पितृविहीन बच्चे कहीं न कहीं अभिशप्त हो ही जाते हैं। बिगड़ैलपन भी इसी पितृविहीनता की देन है।

दूसरों के प्रति असम्मान के बीज न बोएं

बच्चे वही बिगड़ते हैं, जिन्हें अपने ही अभिभावकों से निराशा मिलती है। बच्चों पर गर्व करें और उन्हें अपनी अपेक्षा पर खरा उतरने के पर्याप्त अवसर प्रदान करें। बच्चों के सामने हमेशा दूसरों के प्रति असम्मान की कोई बातचीत या व्यवहार न करें। जब आप स्वयं अपने मित्रों, निकट संबंधियों, पड़ोसियों, सहकर्मियों के प्रति मान-सम्मान प्रकट करेंगे, अपनी कथनी और करनी में कोई अंतर न लाएंगे, तो कोई कारण नहीं कि बच्चे अपने से बड़ों का सम्मान न करें।

बच्चों से लाड़ करें, मगर जरा सोचकर

कुछ मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि बच्चे अभिभावकों का लाड़-प्यार पाकर ही बिगड़ते हैं। उदाहरण देखें

''बीड़ी पिएगा...?'' पांच-छः साल के बच्चे के मुंह पर अभिभावक ने बीड़ी लगा दी। बच्चा अपनी स्वाभाविक मुस्कान फैलाता हुआ सीखे हुए बंदर की तरह 'हां' में सिर हिलाने लगा। गोद में लिए हुए बच्चे की इस अदा को देखकर अभिभावक अति लाड़ प्रदर्शित करते हुए बच्चे के मुंह पर बीड़ी लगाने लगा। आसपास खड़े तमाशा देख रहे घर के अन्य लोग बच्चे को बीड़ी पीते देख हंसने लगे। पांच वर्ष का अबोध बच्चा भी हंसने लगा।

''पी जा मेरे शेर, आखिर बेटा किसका है...सरदार बलवीरसिंह...'' और फिर बारह-तेरह वर्ष के किशोर बच्चे के हाथ में व्हिस्की का पैग थमा दिया। बड़ी शेखी से अपनी लाल हो आई आंखों को बच्चे की आंखों में डालते हुए बोला, ''मैं तो अपने बच्चों को साथ बिठा कर पीता-पिलाता हूं। इसमें चोरी किस बात की...आजकल तो बड़े-बड़े डॉक्टर, इंजीनियर, जज, वकील, प्रोफेसर सभी तो पीते हैं...।''

''रश्मि, तुम मेरी यह बाजी खेलो, मैं अभी आती हूं। शायद कपूर साहब का फोन है। मुझे उनसे कुछ खास बातें करनी हैं। वैसे भी वे फोन को जल्दी कहां रखते हैं।'' मां ने ताश के पत्ते युवा बेटी के हाथ में थमा दिए।

अति लाड़ और प्रगतिशीलता के ये तीनों दृश्य ऐसे मॉड परिवारों से संबंधित हैं, जिनके आचरण और सोच में यही कहा जा सकता है कि इस प्रकार का लाड़-प्यार अंततः बच्चों को बिगाड़ता ही है।

लाड़ के कारण बच्चों में पड़ी हुई ये आदतें उनमें मानसिक विकृतियां न पैदा करें, इसका ख्याल रखें। जब घर के लोग ही बच्चों से बीड़ी, तम्बाकू, पान, सिगरेट, गुटखे आदि मंगवाते हैं, तो ये बच्चे भी इन वस्तुओं का स्वाद अवश्य ले लेना चाहते हैं। चूंकि बच्चे परिवार के लोगों को ही अपना आदर्श मानते हैं, इसलिए वे स्वयं भी अपने आपको इन आदर्शों के अनुरूप बनाना-ढालना प्रारंभ कर देते हैं। यदि परिवार के इन सदस्यों का आचरण आदर्शों के प्रतिकूल होता है, तो उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचती है। चूंकि बच्चों की भावनाएं अति कोमल होती हैं, इसलिए अभिभावकों को चाहिए कि वे लाड़-प्यार से ऊपर के भाव में बह कर ऐसा कोई काम या आचरण न करें, जो आप अपने बच्चों से नहीं कराना चाहते।

अति स्नेह अथवा लाड़ में आकर बच्चे की प्रत्येक गलती को बच्चा समझ कर अनदेखा करना उचित नहीं। इस प्रकार की लापरवाही का अर्थ है कि आप बच्चे को एक और गलती के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

बच्चों को कुछ सामान्य शिष्टाचार की बातें अवश्य सिखाएं, बताएं और समझाएं, ताकि वे इन बातों का पालन करें और अपने व्यक्तित्व में इनको व्यवहार में लाएं, जहां दो बड़े बैठ कर बातचीत कर रहे हों, वहां बच्चे न बैठें। यदि कोई मेहमान अथवा पास-पड़ोस का व्यक्ति घर में आता है, तो उसे औपचारिक अभिवादन करने के बाद वहां से स्वयं बाहर चले जाएं। यदि घर में और कोई नहीं है, तो उन्हें उचित स्थान देकर शिष्टता से यह पूछें कि किससे मिलना है। इस प्रकार की शिष्टता और शालीनता बच्चों को सभ्य बनाएगी। उनमें वैचारिक क्षमता बढ़ाएगी और आत्मीयता लाएगी। वे सामाजिक जीवन से जुड़ेंगे।

बच्चों के प्रति लाड़-प्यार को मूर्त रूप देने के लिए घर के लोगों को चाहिए कि वे घर आए मेहमानों, सह कुटुम्बियों और परिचितों से बच्चों का परिचय कराएं और उन बच्चों को भावनात्मक रूप से इन लोगों से जोड़े।

आप चाहे वैचारिक दृष्टि से कितने ही प्रगतिशील सोच वाले क्यों न हों, छोटे-बड़े के बीच एक मर्यादित दूरी अवश्य बना कर रखें। यह ठीक है कि जब बाप का जूता बेटे के पैर में आने लगता है, तो बेटा बाप का मित्र हो जाता है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि एक ही टेबिल पर दोनों 'पीने' लगें। इस प्रकार की प्रगतिशीलता से बेटे की करतूतें सिर चढ़कर बोलने लगती हैं। इसलिए सामाजिक वर्जनाओं और आदर्शों को स्वीकारें।

बाल्यावस्था के संस्कारों की देन है किशोरों का व्यवहार

जब कोई मुझसे बच्चे के बिगड़ने की शिकायत करते हुए कहता, ''सर सब कुछ करके देख लिया। इस लड़के ने तो हमें कहीं का नहीं छोड़ा। रिश्तेदारों की नजरों से भी गिरा दिया। किसी के सामने मुंह दिखाने लायक भी नहीं रखा...।''

इस प्रकार की शिकायतें करते समय शायद यह भूल जाते हैं कि ख़ुद इन्हीं अभिभावकों ने अति लाड़-प्यार में आकर कभी इन्हीं बच्चों की अनुचित फरमाइशों को केवल इसलिए पूरा किया था कि बच्चा है...। इन्हीं अभिभावकों ने अपने बच्चों की गलतियों को छिपाया था, अनुचित व्यवहारों पर पर्दा डाला था। अब जब बच्चों की वही बुरी आदतें और व्यवहार सिर चढ़ कर बोलने लगे हैं, तो अभिभावक परेशान हैं। उन्हें अपने बच्चों की ये आदतें और व्यवहार इतने अधिक अखरते हैं कि वे तंग आकर बच्चों को प्रताड़ित करते हैं, अपमानित करते हैं, यहां तक कि वे मारपीट कर बच्चों को सही रास्ते पर लाने की कोशिश में लग जाते हैं। लेकिन समस्या बढ़ती ही जाती है। बच्चे बिगड़ते चले जाते हैं।

ऐसे अभिभावकों को अपनी सोच का मूल्यांकन अपने स्तर पर करके इस निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए कि उन्होंने बाल्यावस्था के बदलते संवेगों पर कितना ध्यान दिया है। प्रताड़ित करने से तो बच्चा विद्रोही हो जाता है और वह घर से पलायन करने की सोचने लगता है। इस प्रकार की सोच मन में आते ही बच्चे अनुशासनहीनता करने लगते हैं और मौका पाते ही घर से भाग जाते हैं। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष लगभग एक लाख किशोर घर से भागते हैं। घर से भागने वाले अस्सी प्रतिशत बच्चे अभिभावकों द्वारा प्रताड़ित अथवा अपमानित होते हैं।

बच्चों के प्रमुख संवेग निम्न प्रकार के होते हैं, जो अवस्था, स्थिति और अभिभावकों के सहयोग के साथ परिवर्तित होते रहते हैं। उनके प्रभाव में अंतर आता रहता है। भय, क्रोध, ईर्ष्या, प्रेम, घृणा आदि बच्चों की मानसिकता को प्रभावित करते रहते हैं। इसलिए बाल्यावस्था में बच्चों को परिवार में ऐसे संस्कार दिए जाएं, जिनसे उनके संवेगों को रचनात्मक दिशा मिल सके। गलत संस्कारों में सुधार किया जा सके। इस प्रकार से संवेगों का यह मार्गान्तरण बच्चों में बिगाड़ की स्थिति निर्मित न होने देगा।

बाल्यावस्था संस्कार देने की अवस्था

बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए बाल्यावस्था में ही संस्कारों की नींव डालें। हर माता-पिता की इच्छा होती है कि उसका लाडला बड़ा होकर उसका नाम रोशन

करे। उसके बुढ़ापे का सहारा बने, लेकिन यह तभी संभव है, जब बाल्यावस्था से ही उसमें प्रभावशाली सामाजिक संस्कार डाले जाएं। मां बालक की प्रथम गुरु समझी जाती है। अतः संस्कार डालने का दायित्व पिता के साथ-साथ मां का भी होता है। इतिहास साक्षी है कि जब भी मां ने बेटे में अच्छे संस्कार डाले हैं, तब-तब बच्चों ने योग्य बनकर परिवार का नाम रोशन किया। यदि आप बच्चों में कुछ अच्छे संस्कार डालना चाहते हैं, तो प्रारंभ में इतना अवश्य करें कि वे स्वावलंबी और अनुशासनप्रिय बनें। इसके लिए आप बच्चे को विश्वास में लेकर व्यावहारिक सोच अपनाएं और–

1. उसकी योग्यता, प्रतिमा और क्षमता में विश्वास व्यक्त कर उसे अपने स्तर पर काम करने, सोचने-समझने का अवसर दें।
2. उसके अच्छे कार्यों, व्यवहारों, उपलब्धियों, प्रयासों की प्रशंसा करें, ताकि उसमें काम करने की ललक, इच्छा और उत्साह हमेशा बना रहे।
3. उसकी किसी अज्ञानता का मजाक न उड़ाएं, बल्कि उससे संबंधित अन्य बातों की जानकारी दें, ताकि उसके चिंतन को सफलताओं का खुला आकाश मिले।
4. बच्चों को जोर-जोर से पढ़ने और बोल-बोल कर सुंदर लिखने के लिए प्रेरित करें।
5. तनावों से घिरे बच्चों के साथ हमेशा सहानुभूति से पेश आएं और उन्हें सांत्वना दें।
6. बच्चों के साथ कभी भी संवादहीनता की स्थिति निर्मित न होने दें। जिस प्रकार ठहरा हुआ पानी सड़ जाता है, ठीक उसी प्रकार बच्चों और अभिभावकों के बीच संवादहीनता का व्यवहार बच्चों की मानसिकता और सोच को पंगु कर देता है। मां-बाप और बच्चों में सरसता और जुड़ाव के सारे स्रोतों को बंद कर देता है।
7. बच्चों पर अनुशासन थोपने के बजाए, उन्हें स्वयं अनुशासन स्वीकारने के लिए प्रेरित करें। ''कान खोल कर सुन ले,'' ''चुल्लू भर पानी में डूब मर,'' ''दफा हो जा मेरी आंखों के सामने से'' जैसी चेतावनी भरी कर्कश बातें बच्चों से भूल कर भी न करें।

घर पर दें अनुशासन के संस्कार

भाग-दौड़ की व्यस्तता भरे जीवन में आजकल अभिभावकों को इतना समय नहीं मिलता कि वे बच्चों को पर्याप्त समय दें, उन पर पूरी नजर रखें। इसके बाद